

ॐ नमः शिवाय ॥ १ ॥ नमः शिवाय ॥ २ ॥ नमः शिवाय ॥ ३ ॥
 थरीमनथावभाहृषयकृवि
 शिलिस्थाने ॥ ॥ ह्याहृष
 वकीथायावसिजवादासर्त
 खन ॥ ॥ यजमाननसूया
 ययाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ यज
 मानस्यरीमनथावभाहृष
 वादाद्यनिमित्तार्थसूयायः
 नमः शिवाय ॥ ययायनमः शिवाय ॥ ॐ
 माहान्धकात्रिणि ॥ वाक्काद्य
 दिसिः जात्राय ॥ थवथववा
 कनवादाद्ययाचक ॥ ॥ य
 जमाननः चायावयकृथाय
 सवय ॥ ॥ ॐ निःचायवि
 धिः ॥ थगुनिदन्ध ॥ ॥ ॥ ॥
 नमायकृमलुयसवन ॥ ॥

यजमानेन सूर्यार्थयात्रक
 ॥ ॐ नमो भगवते ॥ यजमानस्य
 श्रीमन्महाव्यास नय रूप
 श्रीमन्महासाधनिमित्तार्थसू
 योयमर्थेनमः॥ पूजागति
 गारातया नयथियकावग
 य॥ ॐ सिद्धि वस्तु ॥ पूजा गति
 जाययकं ॥ पूजा गति वा
 क्लृप्तविय ॥ ॥ अद्यादि ॥ य
 जमानेन्यादि ॥ सूर्यार्थेनमः
 ॥ ॐ नमो भगवते ॥ गुरु नमस्त
 न ॥ न्यासाद्यवाप्य पूजा ॥ श्रीम
 पूजा ॥ ॥ ॥

तथायस्य गद्यपूजा ॥ ॐ द
 धिगिदस्तामूरं यथ्यं दृग्ध
 नामयं ॥ दृग्धं ॥ गद्यकं ये
 वमः ॥ ध्युव द्यायकं ॥ श्री
 पूजा ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ

द्वयस्य ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 ॐ दधि काया ॥ धमि ॥ ॐ वद्वि
 द्वाय नमः ॥ ॐ मानसार्थ
 ॥ गमय ॥ ॐ सामद्वय नमः
 नमः ॥ ॐ यय ॥ यथि वी ॥ इद
 ॥ ॐ गद्यकं द्वाय नमः ॥ ॐ
 गद्यगि ॥ यल ॥ ॐ सदा गिवा
 य नमः ॥ ॐ नमः ॥ गद्यवायव
 ॥ गित ॥ ॐ नमः ॥ ॐ या
 ॥ रुलिनी ॥ यानेनमः ॥ ॐ
 जनादेवाय नमः ॥ ॐ गन्धवा
 यी ॥ गमय ॥ ॐ वद्वि नमः
 ॥ ॐ गन्धवा ॥ कृष्णदक ॥
 ॐ वद्वि नमः ॥ मः ॥ ग
 यणीन सकं जनी थियकृ
 विद्वुः ॥ विधाय ॥ ॥ धमि श्री
 दिन कायाद द्वाय पूजायाद

नमो आदि त्यादि नव ग्रह पूजा
॥ ॐ नमो ॥ १० ॥ ॐ नमो
ग्रह पूजा ॥ ॥ ॥

नमो जन्मय क्रिया पूजा ॥ ॐ
नमो सफर विद्या क्रिया
गुरु शिष्य देवता यहुं दमा
सर्जनमः ॥ ॥ यूसी नमः
॥ ध्यान यथा ॥ ॐ नमो
जिना रुजा सी गथा गयट्ट वि
रुचि नः ॥ यद्गुरु रुधन
वः जन्मद्वेन नमो मयः ॥ ध्यान
न यूसी नमः ॥ श्री खलु चन्द
न ॥ १२ गथा रुत नि ॥ १३ ॥
ॐ नमो स्य सुदना ॥ ॐ सफ
रुचयः ॥ ॐ यूनला दिव्या
॥ ॥ ॥ ॐ १२ गथा रुत नि ॥ १३ ॥
गीत नवधन ॥ १४ ॥ १५ ॥

रुसं स्मिन् ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥
द्वयो जन्मद्वेन नमो मयः ॥ १९ ॥
गुरु शिष्य ॥ ॥ ॐ नमो
क्रिया पूजा विधिः ॥ ॥

नमो ॐ नमो दशला कयाल
पूजा ॥ ॐ नमो नमिन् ॥ १० ॥
ॐ नमो कयाल पूजा विधिः ॥

नमः सफर पूजा ॥ ॐ नमो
नमो विनय ॐ नमो ॥ ११ ॥
नमो कयाल पूजा ॥ ॥

नमः सफर पूजा ॥ ॐ नमो
दश ॥ ॐ नमो सफर ॥ ॐ नमो
नमो सफर कयाल कयाल मिचन्द
नमो सफर नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो

तिनीं वरुस्यति वचं० द्याः
 शेष्टाय च वद० यष्टुश्यामि व०
 मर्याद्विच० धर्मयतीनाम
 ॥ उं स न्यदाग्र ॥ उं सा मस्यति
 विजसिनचेवम विविरेया
 रा ॥ अग्रथ स्वाहा सामाय स्वा
 हो सवित्र स्वाहा स न स्वस्ते
 स्वाहा यूष् स्वाहा वरुस्य
 यथ स्वाहा० द्याय स्वाहा द्या
 याय स्वाहा ॥ अकाय स्वाहा
 ० अय स्वाहा गाय स्वाहा य
 म्र स्वाहा ॥ उं यवित्र वीवेष्ट
 यो ॥ उं अनिरुष्टमसि ॥ उं
 अग्रमय गुरुयनय स्वाहा
 स्वमायवेन सारय स्वाहा
 वेत्रयभाजस स्वाहा० द्युष्ट
 द्रियाय स्वाहा ॥ यथितीमा
 नाम्नामादि ० सीमा रुखा

सा ॥ उं सामस्यत्वाद्युमना रिः
 विचामा ॥ नृजि सासूयः
 स्यवचम न्यस्यति यदादि
 गार्धं द्रव्ययति न धृतिदिष्ट
 न्यादि ॥ उं च न्यमा अय्य न
 नास्य ॥ अक्षिचन दिवि
 यथि यिगग न्वदूल म्वनृमृ
 रु० रुवित्रति कनिकदग
 ॥ उं सामाधनृ० सामाग्रुष्ट
 नमाग्रुष्ट सामावीनं कर्म
 न्यदागि सादनी विदयी विद
 था० सूरयं यिगु यवर्हया
 ददागदये ॥ १७ ॥ उं निः
 याउषाच लयूजा ॥ ॥

गत० सगुहयूजा ॥ उं दधिः
 काया ॥ यत्रिलठ ॥ उं वसा०
 यवित्रमसि ॥ वतालि ॥ उं य

वासवासायनिवातग्रागा७स
सडन्धयान् रुद्रनिरायमा
न॥ रंधीनाम॥ कवयडन्य
निस्वा॥ धामनसादवयन॥
॥ यूक्तस ॥ डं गवडयावर्तमः
दियक्तुप्रयुदाडराकलुहि
नधयी ॥ जनिक ॥ डं यत्रा
यवदस्यगिर्वास॥ यर्थदः
धादमर्त॥ रं नलीयनिदधं
म्यायूषदीर्घायुत्वायवजय
वज्रम ॥ यत्रिगा ॥ डं यत्रिधा
शेय॥ धाशेदीर्घायुत्वाय
वदष्टिचसि॥ लाकखान॥
डं साग्रुक्तमिदमि॥ धृष्टाय
कामायन्रियाय॥ तामर्तव
दिगृक्तामियसंसाचर॥ गन
च ॥ मालखान ॥ डं यत्रा
सामिन्द्रयकाचवियुर्वयथू

॥ ननसंयंथितारुमनसग्रा
वधामिय॥ धामयी ॥ लं चं न ॥
डं दिवधनर्क॥ धृष्टिस्वः
नयूजा॥ ॥ दाकयूजा॥
डं दीर्घायुत्वाय ॥ धृष्टिदाः
कयूजाविधि॥ ॥

तत॥ चन्द्रविम्बयूजा ॥ डं सा
मायणीतांगवधमासर्तन
म॥ यर्थनम॥ तत॥ धा न॥
डं कृष्टयनसंकाशं॥ धृष्टि
मलिरुवर्ण॥ सफरं सविमा
नरुंधातयंत्रादिनीयि॥
॥ डं सामायणीतांगवधानय
र्थनम॥ डं सामायणीतांग
वधनीखलुचन्दन॥ धृष्टि
धृष्टि॥ धृष्टि॥ धृष्टि॥ धृष्टि॥
मालायूषधृष्टिदीयुरुलने
वशादिसेकल्यसिद्धि॥

॥ वंद ॥ ॐ नमो नंददा ॥ ॐ श्री गुरु
नमः ॥ ॐ गुरु नमः ॥ ज्ञाय ॥ ॐ
ॐ उगगांजीवसूनाय कलाया
उगगाविः ॥ ॐ गिद नूपा यच
न्यायः ॥ रुद्ररुखे नमः ॥ सुते ॥
गुरु गभादि ॥ ॐ गि सा मा च
नी ॥ ॥ धनं पूजा याय ॥ ॐ
चन्द्रमसं नमः ॥ ॐ वक्र यज्ञ
नमः ॥ ॐ ॐ देवि ॥ ॐ नमः ॥
गुरु वाय ॥ ॐ नक्र गुरु ज्ञ
यावेदन पूजा ॥ ज्ञाय सायथ
नमाल हवन नमः ॥ गुरु गः
भादि ॥ ॐ गि चन्द्र विम्व पूजा ॥

गुरु गुरु विन जी वि पूजनं
॥ पूर्व सगुरु लमा ॥ ॐ गुरु
लमा यथि वी मूर्क य ॐ दमा
सं नमः ॥ यथं नमः ॥ ॐ गुरु

सदा ॥ ॐ मदा वीर्य ॥ ॐ गुरु
वैजयद ॥ गुरु लमा सदा ध्या
यथा नाचार्य सूर ॥ गिद ॥
ॐ गुरु लमा नयथं नमः
॥ ॐ गुरु लमा यथि वी मूर्क
यथी स्वच्छ च नन्दन ॥ ॐ गुरु
न ॥ ॐ गुरु यज्ञाय वीर ॥ ॐ गुरु
यथी ॥ ॐ गुरु माली काधूय दीय
रुलने व द्यादि संकल्य सिद्धि
नमः ॥ ॐ वंद ॥ ॐ वाक्र गुरु
यि नमः ॥ ॐ गुरु ॥ ॐ वक्र ज्ञा
न नमः ॥ ॐ गुरु को नवानां म
हाचमः ॥ ॐ वंद ॥ ॐ गुरु मयूक
गुरु लमा नमानमः ॥ गुरु
गुरु भादि ॥ ॐ गुरु गुरु लमा
मा पूजा विधि ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥

गुरु वलि पूजा ॥ गुरु गुरु
गुरुका ॥ ॐ वलय गुरु मूर्क

यनमः॥ ध्यानं ॐ दिवा कृष्ण
 तं जगत्त्रिनिश्वसन् च संस्थितं
 । मन्त्रिजनायै रुक्मिणी ध्यातव्यं
 चलयेवरी ॥ ॐ वज्रय ध्यानयु
 र्थिनमः॥ ॐ वज्रय ग्राय मूर्ति
 ययद्गकाष्ठचन्दनकृष्णयः
 स्नायवीतकृष्णमाजायुषीधू
 यदीयरुलनेष्टद्यादिसल्य
 सिद्धिजस्तु ॥ ॐ वद ॥ ॐ महि
 शोयथिवी ॥ स्नाय ॥ ॐ रुमि
 स्वर्गचसवाशा रुमिदानेष्ट
 यस्तुलं । गवदव विथनिः
 लीनमा ॥ ॐ वलिदेवरी ॥ अ
 उगन्धदि ॥ ॐ निवचिपूजा ॥
 विधिः॥ ॥

गतः ॥ वासयूजा ॥ अकृत ॥
 दक्षिणसः ॥ ॐ वासाय नमः

मूर्ति यनमः॥ ध्यानं ॐ यीश
 लुप्तुगियस्य पुरुषं वलदं
 कलं । ध्यायद्यासमूनीश्वरं ॥
 ॐ वासाय नमः॥ मूर्ति य ध्या
 नयर्थिनमः॥ ॐ वासाय न
 अमूर्ति य कर्त्तुं न च नदी
 नाकृतवीनयस्तु यवीवीन
 मालिकायुषीधूयदीयरुल
 नेष्टद्यादि सीकल्यसिद्धिजस्तु
 ॥ ॐ वद ॥ ॐ यस्तु कर्मा ॥
 स्नाय ॥ ॐ कायक कर्त्तुं वल
 दिन कर्त्तुं कर्त्तुं यनि स्थितं ।
 स्नानविज्ञान सर्वज्ञानमस्तु
 वासदेवरी ॥ अगन्धदि
 ॥ ॐ निवासायूजा विधिः॥

गतः ॥ रुमानयूजा ॥ ॥ क
 वस्तुलि ॥ नेष्टुयसः ॥ ॐ रु
 नमस्तु वा मूर्ति य ॐ दमास

नमः॥ यूर्यं नमः॥ ध्यान॥
ॐ वायुयुगलमहा नमः॥ नमः॥
वर्षु शिलाचन॥ विष्णुचम
कारुणाध्यातया रुनु नमः॥
॥ ॐ रुनुमनं वायुमूर्ति यथा
नयूर्यं नमः॥ ॐ रुनुमनं
वायुमूर्ति यथा कृमचन्दन
प्रकाशकयकयक्षायवीन
नमः॥ मालिकायूर्य धूपदी
यरुलनेवद्यादिसंकल्य
द्विजकु॥ वंद॥ ॐ नमः॥
ध्यायान्॥ जाय॥ रमा॥ ॐ
नमः॥ वर्षुमहा विर्यं वायु
यूर्यं शिलाचनं॥ रुनुमूल
रुलयागिरुनुमनं नमः॥
हं॥ अथगन्धादि॥ वृत्तिरुनु
मानयुजाविधिः॥ ॥

नमः॥ विरिषद्युजा॥ मन्त्रा॥
यज्जिमस॥ ॐ विरिषद्युजा
काशमूर्ति यथा नमः॥ ध्यान॥
ॐ यो नमः कलसं रुनु कृ
मारी रुजद्वयी॥ नदोरयक
ननिर्हीनान् मन्त्रं विरिषद्यु
॥ ॐ विरिषद्युजा काशमू
र्ति यथा नयूर्यं नमः॥ ॐ वि
रिषद्युजा काशमूर्ति यथा
नमः॥ अचन्दनयी नान्दनीनय
क्षायवीनयी नमालिकायूर्य
धूपदीयरुलनेवद्यादिसं
कल्यसिद्धिजकु॥ वंद॥ ॐ
नमः॥ सांसारिणसि॥ जाय॥ रमा
॥ ॐ यो नमः वृत्तिं संधारिण
कान्दक्षिणी सदा॥ श्रीमन्
नान्दक्षिणी विरिषद्युजा नमः॥

महं ॥ अथ गन्धादि ॥ ॐ निवि
शीतलपूजाविधिः ॥

नमः कृष्णपूजा ॥ वीहि मा स
वायव्यस ॥ ॐ कृष्णाय वक्रमू
र्त्य ॐ दमासनीनमः ॥ पूष्य
नमः ॥ ध्यान ॥ ॐ धनूर्वाक्षक
रीयाजी ॥ श्व नयी नीमरु द्युनि
। रात्रदा जालमर्जुन ध्यान
वीकयमंत्रच ॥ ॐ कृष्णाय व
क्रमूर्त्य ध्यान पूष्यनमः ॥
ॐ कृष्णाय वक्रमूर्त्य दत्त
दात्रचन्दन ॥ श्व नाक्षर ॥ श्व
नयनीयवीर ॥ श्व नमालिः
कायस्थधूयदीयरुलनेव
शादिसंकल्पसिद्धिप्रसू ॥
वद ॥ ॐ अथ ७ सरु प्रसूः
विशि ॥ ॥ जायसीय ॥ ॐ

जाड वंशिनमः सुखं रात्रदा
जकुलाक्षव ॥ कायस्थनिध
यकुली कृष्णाय वक्रमात्मन
॥ अथ गन्धादि ॥ ॐ नि कृष्णपू
जाविधिः ॥

नमः यत्रशुभामपूजा ॥ ॥ म
गवीहि ॥ उरुत्रदिमि ॥ ॐ य
त्रशुभामाय विष्णुमूर्त्य ॐ
दमासनीनमः ॥ पूष्यनमः ॥
ध्यान ॥ ॐ यमदग्निकुलाक्ष
रीयामीजनसमद्युनि ॥ यत्र
जाममर्जुनदत्तयत्रशुवत्रदधा
विली ॥ ॐ यत्रशुभामाय विष्णु
मूर्त्य ध्यान पूष्यनमः ॥ ॐ
यत्रशुभामाय विष्णुमूर्त्य ग
न्धचन्दननीलाक्षरनीलय
नीयवीरनीलयुष्यमालिका
धूयदीयरुलनेव शादिसं

कल्यसिद्धि वस्तु ॥ वद ॥ ॐ
पुजाय नमः ॥ जाय मा ॥ ॐ का
रुवीर्यविना साययमद मि
कला रुव ॥ रुनी निरु विर्य
येन यष्टु चामा यवेनम ॥ ॐ
यगन्मादि ॥ ॐ नि यष्टु चामा
जा विधि ॥ ॥

गगनमा ॥ ॐ यष्टु जा ॥ ॥ ॐ
नदिस ॥ वीहि ग ॥ ॐ मा ॥
याय विश्वमूर्ति य ॐ द मा स
नीनम ॥ यष्टु नम ॥ ॐ न ॥
ॐ गगदि न्द्र निशा व ॐ यष्टु
वाजा व यष्टु ॥ रुनी रुय ध
वा रु मा मा ॥ ॐ यष्टु यष्टु
न ॥ ॐ मा ॥ ॐ याय मिष्टु मू
रुय यष्टु नम ॥ ॐ मा
ॐ ॥ ॐ याय विश्वमूर्ति यमन

नीलचन्दन ॥ गगनमा ॥ ॐ
नय ॥ यष्टु वी ग ॥ ॐ मा लिका
यष्टु ध्व दी य रु ल ने व द्याः
दि सं कल्यसिद्धि वस्तु ॥ वद
द ॥ ॐ स यष्टु यष्टु नि ॥ जाय
मा ॥ ॐ वद व रु स मा य
क रु शा रुय क व सदा ॥ ॐ
विवाज नमा रु य मा रु ॥ ॐ
यमनी यष्टु ॥ ॐ यगन्मादि ॥
ॐ नि मा रु ॥ ॐ यष्टु जा ॥ ॥

गगनमा ॥ यष्टु जा ॥ ॐ ल हा सा स
॥ ॐ रु ल हा क रु य व नि रु यष्टु वि ग
यष्टु रु यष्टु नि रु द व ना रु लो
काय यष्टु म न थ वि य न य
रु यष्टु य नम ॥ ॐ रु ल हा काय
काय यष्टु वि रु द वि रु रु रु रु
वायु द व ता रु व ला काय वि

गीयत्रथाधियनयसूर्याय
 नमः॥ ॐ स्वस्तिकस्याशुभ
 नष्टबुद्ध्यादिह्यदवनाः
 स्वस्तिकाय न गीयत्रथाधि
 यनयसूर्याय नमः॥ ॐ
 गीयत्रिधि ४॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
विष्णुं ध्यात्वा यः कुरुते ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥
यतः सूर्याय नमः ॥ यतः
वधूनां विधिः ॥

कृष्णनमः सा ॥ ॐ सकलव
य ॥ ॥ ॐ सूर्ययूगा विधि
॥ १ ॥ सूर्यस्य वलि सूर्यवथ
रुत्सन्ध्रवधविद्युन्ध्रमना ॥
नीधामः ॥ ॐ यं जिकरुलाक
उरुलाचायन सोदकिणव
॥ यगवाक नि ॥ यो नूयथा वः
ध ॥ यरुति सूर्या नमास्तुत
मृत्युं तु नयदि ध्यायन्ध्रना
द्वेष्टितमर्वाय सुदध ॥
ॐ निनध पूजा विधि ॥ ॥

ततः सूर्ययूजा ॥ ॐ सूर्याय
सकान्ध्रवथाधियतय आदि
त्याय ॐ दमासन नमः ॥ य
थीनमः ॥ ध्यानं ॥ ॐ सकलव
वथा नूरुं या लोकमल धावि
ली नकवर्धुमलानं जं ध्याय
शीमवध ववि ॥ ध्यानवृथ

नमः ॥ ॐ श्रीमन्मथायनकल
नननकयक्षायवीगनक
मालिकायस्य धूपदीयरुल
नेवद्यादि सैकल्यसिद्धि वस्तु
॥ यद ॥ ॐ नमः ॥ गुरुवाय
व ॥ ॐ आदिर्गर्गययसा
समनिसरुयस्य प्रनिमाः
विश्वयूयं यनिवृद्धिरुजः
सिसामाशिम ॥ ॐ ॥ गनाय
यं कुरुद्वितीयमान ॥ ॐ ॥
आकृष्णनमः सा ॥ जाय ॥
ॐ ॥ ॐ नमः ॥ सुदिनगा
यः ॥ शिबूयाय नमः ॥
जगज्जीवस्वयूयाय नमः
सूर्यानवद्वय ॥ गुरुगन्धा
दि ॥ ॥ ॐ नि सूर्ययूजा ॥
विधि ॥ ॥

ततः गणयति पूजा ॥ ॐ ग

गणनीलागणयनि ॥ ॐ नमः
गणयनियूजा विधिः ॥ ॐ ॥

नमः कोमाजीयूजा ॥ ॐ ययः
वाहसंवदति ॥ ॐ ॥ ॥
ॐ वलिः ॥ ॐ अग्निमूर्धा ॥ गः
वलि ॥ ॐ गन्नादवी ॥ वाः व
लि ॥ ॐ कयानश्वि ॥ ॥

नमः सद्वाजागायूजा ॥ ॐः
सद्वाजागायममीन ॥ ॐ वा
समश्चसविशुद्धीम ॥ ॐ वा
नन्दगिवातनून ॥ ॐ यः
त्यनर्वयदधूक ॥ ॐ नमी
गर्नजगत्क ॥ ॐ नित्यः
वकुपूजाविधिः ॥ ॥

नमः चलाकयालयूजा ॥
ॐ गनोनीलागणयनि ॥ ॐ

अम्ब अम्बिक अम्बा ॥ ॐ अम्बा
नियुक्ति सति ॥ ॐ चूर्णचूर्णः
यावाहयि ॥ ॐ उराधिवरम
श्विनी ॥ ॐ नित्यं चलाकयालय
यूजाविधिः ॥ ॥

नमः सूर्यादियूजा ॥ ॥
ॐ अर्कध्वजजसावन ॥
ॐ दैविशुविचक्रम ॥
ॐ नमः शम्भुवायच ॥
ॐ गणनीलागणयनि ॥
ॐ नभावसुसाययाधि ॥
ॐ नमास्तुसैर्यथायक ॥
ॐ नवीधायीकुलन ॥
ॐ नमः सगमचयगु ॥
ॐ वृहस्पतेश्वरि ॥
ॐ नमिष्यस्वैत्रैः ॥
ॐ श्रीश्वरैः ॥
ॐ विश्वतश्चन्द्रन ॥

ॐ निसूयादियूजाविधिः॥

ननामासादियूजा॥

ॐ अहमासाय नृ० सि ॥

ॐ अहमयदनिवाथा ॥

ॐ ॐ ह्याः न्यायदनि ॥

ॐ नदर्थयखाहनि ॥

ॐ सागयागनवसु ॥

ॐ काणासिहंमदिना० ॥

ॐ सूयर्ष्याः ज्ञान ॥

ॐ आवादेवा॥ ॐ अर्ककर्म

ॐ अर्कयुयवागम ॥

ॐ अमवसुतावध ॥

ॐ ता० सवित्रवर्जः ॥

ॐ समन्त्रासियनि ॥

ॐ अर्ययवाहविकं० ॥

यत्रमिसुस्यनथगृत्स्य

व०थाडाधमनानीग्रामः

युष्मिक्कुलाचकउकुला

चाअनसोदकूव०यगवाः

हनि०योवृथावध०यह

नि०नस्थानमासुननावनु

ननामदयनुनंजदिआः

यश्चनाद्विदमसीजम्

दध०॥ ॐ उदृतीजानवद

सं॥ ॐ अग्निनीरुवश्चनन

॥ ॐ तत्रनिर्विश्वनस्थिना ॥

ॐ देवावधर्युआगत

ॐ अर्कवाजायकनर्वह

ॐ अग्निमीठयुवाहिन

कसकन॥ ॐ समिन० ॥

सिधुमूढ॥ ॐ धीश्वनं ॥

वलिपूजा॥ ॐ प्रायेदिसखा

दावायेदिसखाहा॥ वलि

पूजाविधिः॥

नमोदाक पूजा ॥ उँ दीर्घाय
लावनाय वरुससूय ॥ ॐ
मिदाक पूजा विधिः ॥ ॥

मनः पूजा ॥ उँ अग्निमूर्द्धा ॥
ॐ निमन पूजा विधिः ॥ ॥

उँ स्वस्ति नः स्वास्तु ॥ ॥
उँ ययः यथि यी यय ॥ ॥
उँ विष्णु जगत् मसि ॥ ॥
उँ अग्नि देवता वा ना ॥ ॥
उँ द्योः शानि न विरु ॥ ॥
उँ धूमसि धूर्ध्व धूर्ध्व ॥ ॥
उँ नडा सिष्ठु कु मसि ॥ ॥
मनः ॥ रुत ॥ उँ याः रु लिः
ली ॥ ने यद्य ॥ उँ अन्नयनं ॥
नामूल ॥ उँ नमः यक्ष्म यः
व ॥ नाय नय लिष्टा ॥ उँ मना

ईति ॥ जायसाय ॥ उँ ननोः
वधीसक ॥ यदया ॥ उँ ए
कलीती ॥ अश्वत्थ माया ॥ उँ
अश्वत्थ मावलि ॥ गलस ॥
उँ विश्वेश्वराय वीजाय ॥ वः
लिया ॥ उँ नित्यानन्दयवन्त
॥ गमयसा ॥ उँ अस्यम
धनायना ॥ सग्वनया ॥ उँ
कार्य काल ॥ कोमा नीया
॥ उँ कोमा नी मयूना नूरा ॥
लथया ॥ उँ एकचक्र जगत्
नूतदियी कनकरुवर्णा सो
म्यरुवतु सूचीतः यद्यदः
सुदिवाकनः ॥ अश्वगन्धादि
॥ ॐ मि कलशा चर्चनी ॥ ॥

नमार्थयदासाधनी ॥ ॥ च
नूसाधनीष्टनादिति ॥ वदना

दिसकलसं ॥ॐ॥ निष्कृता इ
यू॥ ४॥ ॥

नत४ तिला इति कावय ७ ॥
व्यावद लाकया लकलगा
शृग्वल्लामादिः ग्रहः गलाव
लिः गायसः सन्धनः कोमा
नथः दृखाविखा आदि न स
कलसं तिला इति वियः उ
लंगत रुल गयाव श्रुवान
लाय प्रनिष्ठां तयं धूनेक ॥
ॐ यू॥ दवीनि ॥ ॥ॐ॥
तिला इति यू॥ ॥

नतायथा कर्म कावय ७ ॥
नतामनुया दहि० गानस
यवकिचायाव ग्वद ४ कल
गनछाय कतय ॥ ॥

उमधीधायथायसं ॥ यू
र्वसयूजा ॥ ॐ॥ गलायामि ॥
ॐ॥ दवस्यला ॥ ॥ द्वाद्
नाग ॥ ॐ॥ द्वात्रसमूद्रायः
नमः ॥ द ॥ ॐ॥ समूद्राः
दमिसधूमा ३ उदात्रदया
० सूमनाममृ तवमानना
युतस्य नाममुद्रं यदि सि
जिक्कायं वतानाममृ तस्य
नारि ४ ॥ ॥ दकि॥ द्वाक
नाग ॥ ॐ॥ दधिसमूद्रायन
मः ॥ ॐ॥ समूयलावा नाय
खाहासविनायलावा ना
यखाहा नूनाधुयायला
वा नायखाहा यनिधुया
यखावा नायखाहा सि वि
विद्यायलावा नायखाहा

श्रुयश्वत्वायैवागाय स्वाहा
सिमिदायत्वावागाय स्वाहा
॥ यन्त्रिभा॥ एतन्मात्रं ॥
ॐ सुनासुमूढाय नमः ॥
वद ॥ ॐ समुद्रं शुक्लासः
लिलस्यमध्वनाय नाना
यनुनविष्णुना ॥ ॐ न्याया
वकीवृषशावनाठ आया
दवीविहमावदनु ॥ ॥
उरुलतायुता नाग ॥ ॐ
ॐ सुसमूढाय नमः ॥ य
द ॥ ॐ समुद्रं तानुमनाश्रु
पुननचक्रा ॐ धदिवा
अनउचन ॥ मृतीयत्वाव
जसितस्त्रिवा ॐ समुद्राय
यसुमरिवावदनु ॥ मृ
रिक्ता ॥ ॐ अश्वकान् ॥ क

स्वाय ॥ ॐ यत्नं यत्नं गच्छ
यत्न ॥ यत्नं व ॥ ॐ विष्णुः
नमः ॥ यद्वादय ॥ ॐ वृः
कलस्यत ॥ कल ॥ ॐ न
मः ॥ गच्छ वायव ॥ यच्च ग
य ॥ ॐ त्वमग्नेयुहिरुमा
॥ यक्ष्मन्त ॥ ॐ ययः ॥ यः
थियी ॥ वीहि ॥ ॐ वीहय
स्थम ॥ गमायधी ॥ ॐ याः
तावधीपूर्वाजातादवयः
क्षियूर्वयूजा ॥ मननवन्
क्षसदृगर्गक्षमाक्षिसफ
च ॥ रुत ॥ ॐ याः ॥ रुलिहि ॥
यगिष्ठा ॥ ॐ मना ईति ॥ ॐ
निकलनयूजाविधिः ॥ ॥

नतः पूर्वदण्डियडमानस्य
क्षिकासनसदय ॥ निर्मा

कुन ॥ उं नक्षत्रं ॥ च ल व
 नि ॥ उं अश्व वाच द ॥ म न
 रं ता उ चान त्वा य ॥ उं स्वः
 मि ना मि सी ता म ॥ य ज मा
 न स्ना न या च क ॥ पूर्व क ल
 ण न स्ना न या य ॥ उं समूडा
 दूर्मि ॥ मृत्ति का ॥ उं अश्व
 कान्क ॥ क या य ॥ उं य ऊ य
 ऊं न च ॥ ॥ दक्षि ण क ल
 ण न स्ना न या य ॥ उं समूडा
 य त्वा ॥ य न्न व ॥ उं ॐ दं वि
 क् ॥ य द्वा दि ॥ उं वृक्ष ण स्य
 नं ॥ ॥ य श्चि म क ल ण न
 स्ना न या य ॥ उं समूडं अश्व
 ॥ क स्य ॥ उं न म ४ ण म् वा य
 च ॥ य श्चि म य ॥ उं वा च नं
 पु श्च ॥ मी ति ॥ ॥ उ

रुज समूक ल ण न स्ना या य ॥
 उं समूडं लो न म ना ॥ यं चा
 मृत ॥ उं अश्व वस्त्र ॥ वीहिः
 ॥ वीह य श्च म ॥ ण न मा य
 धी ॥ उं या ४ उा य धी ॥ ॥ गं
 ख न न लू य ॥ उं या ४ रु लि
 लि ॥ अ व नि ॥ उं नं आ सि ॥
 ता य न ह ल ॥ उं म ना र्क
 ति ॥ य नि षा ॥ ॐ नि स्ना न
 वि धि ४ ॥ ॥ ॥

थडा स न ल व का डा या हि न
 वा क्क णं का य ॥ ॥ म व डा
 स न न गि य का डा ॥ ला मा
 ला व य ऊ या उ रु व स स्वः
 मि क स स्व न ॥ ॥ क ण न
 यू न वा क्क णं डा य ज मा न व
 थि य कः ह म या य ॥ चि नः

लन॥ ॐ ४ स्वाहा ॥ ॐ वृक्ष
यज्ञानं ॥ ॐ युव ४ स्वाहा ॥
ॐ ॐ दं विष्णु ॥ ॐ स्व ४ स्वा
हा ॥ ॐ नम ४ गं मृदाय च ॥
वर्गगतलनयाडा ला
य ॥ ॥ ॐ निशिनलनः
सजमानसाधनयाय ॥ ॥

सजमाननकननक ॥ क
लगादिः नवग्रहः शुक्ल
मादिनसकलस्वखाननः
नकः चरादिननक ॥
ॐ आदिद्यादिनवग्रहस्था
ॐ दमासननम ॥ यूथीन
चन्दनसिद्धनम ॥ ॐ
मियूजाविधि ॥ ॥

गत ४ स्वसमकुणजूर्यदा

यथन् ॥ गं स्वसद्वृक्षन
चतस्वाननयावः सजमान
नकनकनय ॥ आदिस्वस
सूर्ययाचक ॥ ॥ अद्यादि ॥
ॐ रादयदं कुसकम्याः
जातायविशखनकगाय
काश्रय ॥ गगाय ॥ आदिद्या
यन्नीश्वनायधिदेवतायः
अग्निप्रत्यधिदेवतायमः
१ध्वकृतमकुलायपूर्वादि
मुखकपिलाग्निदेवताक
लिङ्गदं ॥ गगाय द्वादश
कुलप्रमानवर्तुलाकृतः
य आदिद्यादेवाधिदेवता
श्वनायप्रत्यधिदेवताग्न
यहिनक्षत्रमुयमूर्ध्विदि
युन्द ४ सवितादेवतायः

नमः गणेशसहिनायः यजमा
नस्यशीमत्रधवत्राहूनज्ज
दित्वाय ॐ दमर्षं गृहा ६ः
स्वाहा ॥ हायक ॥ के नन
क ॥ ॐ वं धूक यूस्य सं का ॥
न का लल समय ४ ॥ ला क
ना ॥ धा ज ग दी य ४ ॥ न कि यः
कु ४ ॥ रा स्त ४ ॥ ॐ नि आदि
हया अर्थ विय विधि ४ ॥ ॥

नमः सामया न अर्थ विय ॥
अद्यादि ॥ ॐ सामया न
समूदा इ वा य वे न व क म
च रु द न्धा जा ना य क रि क
न क गाय अ य य ॥ न य वे
न जा न य ॥ न व र्ण य दः
कि धा रि मुख यिं ग ला म य

आ ॥ न य दि ती श्व नार्थ ६ च
द म धु ला क न य साम दः
वा धि द व नो मा य य ह धिः
द व नो शो ॥ ग न म म वि ग
य जी कु न ४ साम द व नो श
नमः गणेशसहिनाय ॥ यज
मानस्यशीमत्रधवत्राहून
सामाय ॐ दमर्षं गृहा ६ः
स्वाहा ॥ ॥ कडा का व सा
य या य ॥ ॐ हि म गं ख म धा
नारु ४ का ग यूस्य म या यिः
वा ॥ ग न्धा का ला रि धी र ल
स द न्धा कि य य कु ४ ॥ ॥
ॐ नि सामया अर्थ विय ॥ ॥

नमः अं न य या न अर्थ या च
क ॥ अद्यादि ॥ ॐ अं न य

जगलसहिनाय ॥ ॥ य
उमानस्यहीमत्रथावत्रा
रुनवृधाय ॐ दमर्धं गृहा
हस्राहा ॥ ककदाव ॥ सा
य ॥ उं नोदिहीगर्कं सैरुगं
४ कर्त्तिकालदलयरु ४ सा
मय्यामर्कं नञावृध ४ सा
निययचक्र ४ ॥ अत्रगन्धा
दि ॥ ॐ निवृधया ननृधः
वियविधि ४ ॥ ॥

नन४ वृरुस्यनियान्नृधवि
य ॥ अत्रादि ॥ उं वृरुस्य
तयसिन्धूय ॥ सा कृवायका
र्त्तिककृष्णकादय्यां जान
याह्रनरुल्लुलिनकृशाय
१ गल्ल ॥ सा शायवृधजान

अथीनवर्त्तुयडरुनाहिम
स्वगिरवा ॥ नं यडरुत्रदि
गीश्वनाययद्माकृतिमलु
लायवृरुस्यनिदवाधिद
वतावृध ॥ लयस्यधिदव
नायसमदग्निमृर्विचिद्रु
पुन्यावृरुस्यनिदवतास्य
नजगलसहिनाय ॥ ॥
सजमानस्यहीमत्रथाव
त्रारुननिमित्तार्थ ॐ दम
र्धं गृहानस्राहा ॥ ककदा
व ॥ साय ॥ उं सिंदलीकः
लिकाकात्र ४ सुशागयूय
दाउविउ ॥ यवमकीमहा
नञागुत्र ४ सा निययचक्र
उ ॥ अत्रगन्धादि ॥ ॐ निवृ
रुस्यनिन्नृधवियविधि ४ ॥

मनः ४ सुक्यात अर्थवियक
॥ अद्यादि ॥ ॐ सुक्याशाः
गवतदः ॥ अकृवायसेवसु
कनवर्माजानाययुष्यनः
कृणायवाकृलजानयसुः
कृवर्ष्ययपूर्वकिमूरवकाः
ठकामययूर्वदिगीश्वरा
यययुजयमकुलाकनयः
सुकदंवाधियदवतायसुः
कायययधियदवर्न्याय
वलिष्ठमूर्विषिदूयूकृन्द
४ सुकदंवतायननगल
सहिताय ॥ ॥ यजमानः
स्यरीमजधवत्राकननिः
मिहृर्थं ॐ दमर्षं नृकान
स्वाहा ॥ कंककाव ॥ कौश

ॐ काशकृन्दन्मकाशकृ
सुक्तावर्ष्यविशुषल ४ ॥ अः
निददातुवानिर्हंदेत्यमः
नीसराग्नव ४ ॥ अरुगन्धः
दि ॥ ॐ नि सुक्यात अर्थः
वियविधि ४ ॥ ॥

नमः ४ गनिश्वरात अर्थवि
य ॥ अद्यादि ॥ ॐ गनिश्वरा
यसोनासुदः ॥ अकृवायमा
द्यसुक्तावर्ष्यजानायवाः
हिनीनर्कणायकाश्वय ॥ ग
णायसूदजानयनीलवर्ष्य
यययिमाकिमूरवायमकान
जानयययिमदिगीश्वराः
यदीर्वाकृनिमकुलाय ॥ अः
नेश्वरादंवाधियदवतायस

मयत्तुविदवताययाजाय
तय अथर्वसुत्रय गाय
शीकुन्द ४ गनेश्वरदवताः
सुकुजगलसहि नाय ॥ ॥
यजमानस्यरीमजधवना
हननिमित्तार्थं ॐ दमर्त्य
गृहानखाहा ॥ कंदादाव ॥
शार्ङ्ग ॥ उं नीलात्यदस्यामा
रिनीजनसमायिता। गने
श्वरयह्यैसां सदाशान्ति
ययच्छु ॥ अथगन्धादि ॥
ॐ गिगनेश्वरया अर्थविः
यविधि ४ ॥ ॥ ॥

गतावाह्या न अर्थविद्य ॥
अथादि ॥ उं गार्ध्वमलय
दशगृहायकारिक कृष्टः

कृष्टुमाश्रंजातायरात्रः
लीनकृपाययाणी नरगाः
यगृदजातयकृष्टवर्णः
यग्निसारिमूखत्रोदाग्रय
नेष्टत्यदिनीश्वरायमका
लाकृमिमल्लायनाहद
वाधिदवताकोलाययत्य
धिदवतायसर्पायवासद
वार्षिमाययीकुन्दावूडाद
वतासुकुजगतलसहिः
नाय ॥ ॥ यजमानस्यरी
मजधवनाहननिमित्तार्थं
ॐ दमर्त्यगृहानखाहा ॥
कंदादाव ॥ शार्ङ्ग ॥ उं अ
गनीयूथसंकारगनीलाः
अननिरु ४ सदा। शान्तिद
दाहवानिलीनाहयन्याक

मर्दन ४॥ अथ गन्धादि ॥ ॐ
निवाहया अर्थविय ॥ ॥

तत ४ कंठुयात अर्थविय ॥
अथादि ॥ ॐ कंठुयात अर्थविय
भाहवाय माद्यकसदिनीः
यायीजातायाः श्वनकशा
यजेमूनिः श्वनय शूद्रजा
तथ धूमवर्षुययश्चिमरि
त्रोदा नय वायव्यदिनी श्व
वायव्यभाक निमलुलाय
कंठुयदवनायः धिदवना
यचिबुमुकाययत्यधिदव
नायेवक्रः धिदवक्रिमायणी
चन्द्र ४ कुनयदवनायकन
गलसहिनाय ॥ ॥ यजमा
नस्य रामवथा वना रुनः

निमित्तार्थ ॐ दमर्ष गृहान
स्वाहा ॥ कंठुयात ॥ श्वन
॥ ॐ सिन्दूरचित्राकाशान
कयप्रनितायिच ॥ कंठुया
वकनशाङ्गा ४ सदा शान्तिः
ययचुतु ॥ अथ गन्धादि ॥
ॐ निवाहया अर्थविय ॥ ॥

तत ४ जन्मयात अर्थविय ॥
अथादि ॥ ॐ जन्मन स्वज
न्मय रुवायस्ववला जन्मा
यस्वनकशायस्वसिकाः
कनयः श्वनवर्षुय ॐ
श्वनाययश्चिमरिमुखाः
यजन्मयदवनायाधिदवः
नासकयथायत्यधिदव
नाहिनी श्वनर्षुयायकः

नमोऽसहिनाय ॥ ॥ यज
मानस्य शीमत्रथा वनाहन
निमित्तार्थं ॐ दमर्षं गृहा
लखाहा ॥ कं कदाव ॥ सा
री ॥ ॐ ॥ स्व न ॥ स्व ना मत्रध
ना ॥ स्व न वृष रुसं लि न ॥
॥ ३ मया सहि न था दे वा ॥
ज न्म दे व न मा म्य हं ॥ अथ
गन्धादि ॥ ॐ नि ज न्मा या अ
द्य विद्य विधि ॥ न व य रु
यी ॥ ॥ ॥

नमोऽसहिनाय यकलनासत्र
द्ययावकं ॥ अथादि ॥ ॐ
यजमानस्य शीमत्रथा व
नाहन निमित्तार्थं मृत्पूज
यकलनासत्र दमर्षं गृ

हालखाहा ॥ ॐ नि मृत्पूज
यकलनासत्र द्यविद्य ॥ ॥

थार्थमाऽलसंयान अद्यवि
द्यविधि ॥ ॥

थार्थवलि स अद्यविद्यवि
धि ॥ ॥ ॥

थार्थमाऽसस अद्यविद्य
विधि ॥ ॥ ॥

थार्थसंयन स अद्यविद्य
विधि ॥ ॥ ॥

थार्थकोमाजी स अद्यवि
द्यविधि ॥ ॥

धार्थं सूर्यादि सूर्य विः
य विधिः ॥ ॥ ॥

द्वयौ या उ न्म स विया र्थ
धनं उ न्म य र्गि का स गू र्ध
या च कं विधिः ॥ ॥

ॐ गि ज न म य र्ति श्रु य ॥ ॥

कंदर्पखंडाञ्जनकावत
॥६॥ उँ ॐ दं रु ल यू य नाः
मूलरुलनेषादि सं क
ल्य सिद्धि न यु ॥ ॥ मधुल

॥ गुरुयास्तु ॥ ॐ उ वाः
कृष्ण ॥ ॐ दधिर्गन्धर्व
नारुमिह्यादि ॥ ॥ ॥

मह्यं जय या ॥ ॐ न नो य
धी ॥ ॥ गणसया ॥ ॐ विः

श्रुत्वा यः ॥ ॥ वलिया ॥ ॐ
 निष्ठा नन्द ॥ ॥ १॥ यः सया
 ॥ ॐ नमस्तु नमः ॥ ॥ सग्व
 नया ॥ ॐ श्रुत्वा मा वलि ॥
 कोमा नीया ॥ ॐ कोमा नीमः
 यूमा ॥ ॐ नमस्तु काया ॥
 ॐ १॥ नमस्तु नमस्तु ॥ ॥
 ॐ यथा वाने यथा बाध ॥ क
 तन ॥ ॐ नमस्तु ॥ ॥
 मधुलस याद ह्यान नक्षत्र
 केयजमीनः लाहाने सिच
 क ॥ ॐ निष्ठा या यवि
 धि ॥ ॥ ॥

थनलिम्बुत्तमादियान्
अर्थवियक्तं ॥ स्त्रान्तं न
नक्तं ॥ ॐ अम्बुत्तमादि

२२७ ॥ २२

॥ स्वसिद्धिनिधि श्रीगणेश

श्री श्री सरस्वती विद्यावती

१ श्री गणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः

१.१२५ १

६०	६१	६२
६३	६४	६५
६६	६७	६८

三
世
三
世

॥ दधि ॥

1545

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥३॥

三

正

三

उद्यनस्तनम्
रुद्रिस्तनम्

同

॥ ५ ॥

क्रि.म.

三

१ मृषु विनीतं
दिशायाम् ॥

१ नाल ॥ शचन्द्रवि
न्याल ॥ नन्दधर
याम ॥ तय ॥

२ ही म त थ क ङ य ङ य म थ थ थ ॥

१ नवग्रहाष्टाय ॥

गी. ज. म. ७५॥

ब्रुचिज जीवि स्थब्द मास
 ननमः॥ यस्मिन् नमः॥ ॥
 एव चोक्तं नरुक्ता र्थः चंद
 नसिंदलः यस्मिन् विनः य
 स्यः धूपः दीयः ने वं शादि॥
 थन आसी ॥ ५ ॥

ततः ४ अः श्व लु मा या अ च
विय ॥ लः य नः अ रु नः स्वा
नः क णः न य ॥ ॐ अ द्या दि
॥ ॐ अ श्व लु मा मु निः श्वः
श्वः ध र्मा दि व र्ग सै ष द ।
गृ हा ना र्थ म या द रु माः
यू ४ की र्ति ष दा रु व ॥ ॥
य ज मा न स्य शी म न थ व
ना रु ण र्थ अ श्व लु मा मु नः

१ इत्यथ लिङ्काः प्रत्ययान्तयस्मानलवङ्गाः

दमर्षं गृहाण स्वाहा ॥ सां
ॐ ॥ ॐ ति अं ग्य लु मा या अ
र्ष विय विधि ॥ ॥ ॥

न त ४ वलिया अर्ष विय ॥ अ
द्यादि ॥ ॐ वल गृहाण चार्ष
क ड न दी वाच यू वि नी ॥ ग
किं क वा उ म ल क्षी वृ द्वि म
नि स दाम म ॥ य ज मान
स्य गी म न था व वा रु ध र्थ
वल य ॐ द म र्ष गृ हा ण स्वा
हा ॥ सां ॥ ॐ ति वलिया न
अर्ष विय विधि ॥ ॥

न त ४ या स या न अर्ष विय
॥ अ द्यादि ॥ ॐ या सा मु नि
य ॐ य वि द्या स्ना न स्य सि

ध सा दी य मा न मि दं चार्ष
गृही त्वा रु ल दा र व ॥ य
ज मा न स्य गी म न था व वा
रु ध र्थ या सा य ॐ द म र्ष
गृ हा ण स्वा हा ॥ सां ॥ अ
ग ग न्धा दि ॥ ॐ ति या स या
न अर्ष विय विधि ॥ ॥

न त ४ रु नू म न या न अर्ष
विय ॥ अ द्यादि ॥ ॐ रु नू
म न सू वी वा य व न द र्थ
रु वा य च ॥ अर्ष न स्मै म या
द रु वि द्यु ना ण क वा रु व
॥ य ज मा न स्य गी म न था
व वा रु ध र्थ रु नू म न या य
ॐ द म र्ष गृ हा ण स्वा हा
॥ ॥ सां ॥ अ ग ग न्धा दि

॥ॐ निरु नम गयान अर्थ
विय विधि ४॥

नम विरी वल यान अर्थ वि
य ॥ ॥ अद्यादि ॥ ॐ विरी
वल मरु वी न ली कं ग पाव
व यिय । गृहा ए द व द रु
र्थ समयाय रु प्रा रु व ॥ य
जमान स्य गी मत्र था व नारु
लार्थ विरी व ल य वृ द म
र्थ गृहा ए स्वा हा ॥ स्मार्थ ॥
अग्न गन्धादि ॥ ॐ नि विरी
वल या अर्थ विय विधि ४ ॥

नम कय या न अर्थ विय ॥
अद्यादि ॥ ॐ कया य व क
नू या य धर्म धनू र्द वा य य

उर्य द ला य म नि र्थ वृ व
द्वि यदा रु व ॥ यज मान स्य
गी मत्र था व नारु लार्थ कया
य वृ द मर्थ गृहा न स्वा हा ॥
स्मार्थ ॥ अग्न गन्धादि ॥ ॐ नि
कय या अर्थ विय विधि ४ ॥

नम य गु न म मयान अर्थ वि
य ॥ अद्यादि ॥ ॐ न सो य गु
न मय मया चार्थ य दी य
न । विष्णु व गु व न गाय का
मार्थ सिद्धि दा रु व ॥ यज
मान स्य गी मत्र था व नारु
लार्थ य न गु न मय य वृ द
मर्थ गृहा ए स्वा हा ॥ ॥
स्मार्थ ॥ अग्न गन्धादि ॥ ॐ
नि य न गु न मया अर्थ वि

यविधिः॥ ॥ ॥

नतः मार्कः १७ यथा न अर्थ
वियः॥ ॥ अथादि ॥ ॐ मार्कः
१७ यमनि १७ यमनि १७
मरुलपद ॥ अर्थ १७
६ मेद ६ नमः १७ नमो सुखी
रुव ॥ यजमानस्य सीम
नथावजाह ६ अर्थ मार्कः
१७ यथाय ०० दमर्थ १७
६ स्याह ॥ जाय ॥ साव ॥
०० निमार्क १७ यथा अर्थ
वियविधिः॥ ॥ ॥

नतः चन्दनः सिद्धः यज
मः ०० दमर्थ १७ यथा
धूयदीयः रुलनेव आदिः

संकल्पसिद्धिप्रभुः॥ ॥ ॥

नतः चन्दविम्वस अर्थवि
यः॥ अथादि ॥ ॐ सामायः
दीवस मूदा ह वाय ॥ ॥
०० निचन्द विम्वस अर्थवि
यविधिः॥ ॥ ॥

नतः अश्वत्था शार्ङ्ग ॥
मधुल ॥ कक्षदाव ॥ ॐ वि
वायूः १७ सीदिनामिर्ग विख्या
नायुषयो नृवं ॥ कृन्माश्व
लमनसमसंधाननभासु
र्व ॥ १॥ वलिया शार्ङ्ग ॥ ॐ
यथाहिवलवान् लाकव
लत्वं वलं श्वर्ज ॥ तथाविध
हिमानि तीयेत्यव

वचुलं ॥ २ ॥ अथ गन्धादि
॥ वलिया सा ॥ ३ ॥

नता या स या सा ॥ ३ ॥ ॐ सर्व
॥ अं चक्रा सा च रक्षा रक्षा
युगि वि र ॥ ४ ॥ यव दं नी निः
॥ अं रु नं रु या स द व नं ॥
३ ॥ अथ गन्धादि ॥ ॐ नि या
स या सा ॥ ३ ॥

नत ४ रु नु म न या सा ॥ ३ ॥
ॐ न क व रु म रु या व वा य
युगि ला च न ४ रु नु मूल
रु लं या नि रु नु मान न भा
मु रं ॥ ४ ॥ अथ गन्धादि ॥
ॐ नि रु नु मान या सा ॥ ३ ॥

नता विरी व द या सा ॥ ३ ॥
ॐ यो ल रु ल क रु नं ॥

लं का वा स रु री स द ॥ वा रु
सा धि य वि द वं न म ई रु ॥
वि री व द ॥ ५ ॥ अथ गन्धा
दि ॥ ॥ ॐ नि वि री व दः
या ॥ ॥ ॥

नत ४ रु य या स सा ॥ ३ ॥ ॐ रु
या ध नु अ री व रु म नी नी
य व ला म नि ४ न मा मि मः
नि य र ग रु म मि ज न न मा
म रु ॥ ५ ॥ अथ गन्धादि ॥
ॐ नि रु य या सा ॥ ३ ॥

नत ४ य व रु ना म या सा ॥ ३ ॥
॥ ॐ स म रु ल क रु य व रुः
ज सा न ल री नि रु ४ स नि द
रु मि या या नि जा म द रु न
भा मु रं ॥ अथ गन्धादि ॥ ॥

कौ३

॥ॐ ति य न गु ना म या श्रु यी॥

न न ४ मा क्क ॥ ७ य या श्रु यी॥

ॐ मा ॥ ७ य या म हा रा ॥ ग मा ॥

क ॥ ७ य या म हा मू नि ४ ॥ न मा

२ मि य य ना र क्क चि त्रं जी व

न मा मू र ॥ ७ य ग न्धा दि ॥

८ ॥ ॐ ति मा क्क ॥ ७ य या श्रु

य वि धि ४ ॥ ॥

न न ४ य न्द्र या श्रु यी ॥ ॐ श्रुः

मृ तां गुं म हा रं डीः यू र्ध्व क

ल क ला ध रं ॥ ६ सा स नं च

ग गि नः तं द वं च न मा म्हा

६ ॥ क र ॥ ७ य ॥ ७ य ग न्धा

दि ॥ म धु ल वि स र्ज न या ॥

दा डा ॥ स्ना न न च्छु य ॥ ला ॥

हा ग सि य ॥ ॐ ति सा म या

श्रु यी वि धि ४ ॥ ॥

न ना य रू सिं हा स न या उ रूः

व स रं ॥ ॥ य ज मा न श्रु यः

या य या लं ख न हा य ॥ ॐ द

व श्रु त्वा ॥ म न रू ता उ चान

त्वा य ॥ थ का लि न कि नि ना

ॐ स्व स्ति ना मि मी ता ॥ स

ग्व न स व मु न या व त्वा य ॥

व मु वि य ॥ ॐ व सा य वि न

म सि ॥ ॥ य वि लं ६ ॥ य वि

ग वि य ॥ यं ता वि वि य ॥ ॥

ज नि व वि य ॥ ॐ यू वा सू वा

सा ॥ ॥ यू रू स वि य ॥ ॐ

ग डा ड या व नं ॥ लं च ता ॥

न नं च क ॥ ॐ हि न श्रु न रू

॥ ॥ अतननवक ॥ ॐ यदय
क ॥ सिंदूर ॥ ॐ लंजविष्टदा
॥ ॥ सग्वन ॥ ॐ दधिकाश्रा
॥ ॥ लाकसान ॥ ॐ याशूरु
ऊमदग्नि ॥ ॥ स्नानमाल ॥
ॐ यद्यप्यत्रसामि ॥ संरुच
नियतिष्ठा ॥ ॥ ॥

वाक्काशनश्राद्धतिवियय
तिष्ठात्वाय ॥ ॐ मनार्जनि
॥ तायक्षेत्र ॥ यतिष्ठायाः
यः ॥ यजमान ॥ ॥

तनः सकत्रधक्यक ॥
यक्त्याडकत्रयोसत्राकः
द्रुसः न्वयः ग्वात्रतयाडा
॥ सकत्रधजायक ॥ वद ॥
ॐ पूवदस्मादिष्टुवूय ॐ

जमुमहिमानं ॥ एकवदीहि
यदीष्टिवदीचउ४यदीयं
चयदीवष्टयदीसकय
दीष्टवनानीयथ०स्वाहा ॥
ॐ निसकयथक्यविधिः
४ ॥ ॥ ॥

तनासूर्यविस्तत्रधयूजनं
॥ ॐ तयद्रुष्टवहिनीयू ॥
यजमानत्रधसदन ॥ वा
क ॥ ॐ सूर्ययूत्राहविक
४ ॥ सूर्यस्यत्रग्निस्तस्यत्र
धरुन्मस्यत्रधविश्वस
ना ॥ नीयामः ॥ लीयंजिकः
स्तुलाकुरुस्तुलायास्तत्रः
सोदक्षिणाव४यगवाहः
ति४ ॥ योवृषयावध४यह

किं क्खानमाहुं नाना मय
यं तु नयं विष्णो यश्च नाना द
दि नमस्सीय मय दध् ॥ ४ ॥ थं
दनं ॥ ॥ ॥ ॥

दुर्वा क्त नाना का अक न न ॥
उं यं न य न्क ॥ उं रू न्ना क्त
वजि वृ स वि नाना य शी क्त
मि द व नाना रू न्ना का य व थ
म व थ धि य न य न म ॥ ४ ॥ ॐ
त्यादि ॥ १ ॥ द्या या र्थ ॥
व थ पूजा विधि ॥ ॥

ध्रुव द नाना या च क ॥ उं ध्रु
व म सि ध्रु वं ता य न्ना मि ध्रु
व धि या श्वा म यि म द्रु वं ता
दी वृ रू स्य ति । म या य त्या य

जा व ती स री डी व श व ॥ द
४ ॥ न ॥ ॥ ध्रु व न ग नि य
ज मान न म ख न सी ख दा
धाय क ॥ क त दा डान म
स्का व या च क ॥ ॐ नि ध्रु व ॥

व थ म या दा व य उ थ ॥ उं
य ध्रु व दा रू न यं सी क्ति वि
दा ना रु नि य व थ ॥ व थ म
र्य स्य रं द कि रं न ना दि वा
वृ यि ॥ य थ व थ म माः
ना रु दा या र्थ व स्य नि
। म्रु य ना रि ॥ स दा न्ना कान
न द नि य क्ति कि क रे ॥ ॥
मि ड न या ध र्थ ॥ ॥ उं य
ध्रु व द्रु म् ता ना र्थ ॥ क वि
दा ना रु नि य व थ ॥ व थ

सूर्यस्य शं द नि सा ना नी दि
य नू पि क्षी ॥ उं य धा न र्थं स
मा भो रु ॥ ध मि सा ज न या ॥

त मा य ज मा न स्य क्त क सः
वं सा च कं न ॥ कं न न कं
॥ न ध स यू जा ॥ उं री म न
ध धि य न य सूर्य च ं द
मा स न न म ॥ यूर्य न म ॥
॥ ॥ ध वा क न ॥ चं न सिं दू
न य ज म स्त्वा न धू य म नः
वि य कः पू र ६ क्का दु काः
पू नः रू ल नै व द्र त य क ॥
शूर्य या च क ॥ शं ख स इ इ
न स्य ॥ उं अ श वा ला रु ॥
उं अ श्वा दि ॥ उं य ज मा न
स्य री म न धा व वा रु न नि

मि त्य र्थं द म र्थं न हानः
स्या रु ॥ उं शं ख की वा म्भू यः
प्या नि न त्ता नि वि वि धा नि च
। री म न र्थं उ स या क मि द म
र्थ न मा न म ॥ शं ख यू जा
न म स्का न या य ॥ ॥ री म
॥ उं स फ स फ मि व यो दिः
मा स स फ दि ना नि च । त सि
न री म न र्थ ना म स र्व या व
यु क्षा न ॥ उं व क्का म्भू जा स
न म र्ण य यु र्ले क सिं धू राः
नू स म रु ड ग ता स धि यः
रु जा मि ॥ उं य द्भ द्भ या रु य
क रं द ध रं वा रु मी लि कः
मी लि म नू र्ण व चि वं चि न र्ण
॥ अ य ग न्धा दि ॥ ॥

धनसूर्यदण्डविराचक॥
दीक्षावाकसा॥ दीक्षांमवा
कसा॥ उयींजलितयक॥
शीसूर्यचनम॥ ३॥ ४०
निसूर्ययूजा॥ ॥ ॥

धनग्रहसदक्षिणात्रथश्र
दिनसकप्रसूतय॥ नव
ग्रहादिःश्रृणुमादि वि
सर्जनयाय॥ ३३ दयंत
तस॥ ॥ दानयाचक॥ श्र
निकृष्टयाजवस॥ यजमा
नयशिमूखन॥ ॥ वाक्
नरिमूख॥ कनक॥ ३
श्रुदित्याय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मिषयमिषेवजायु
दमासनीनम॥ ३॥ य

हीनम॥ ३॥ ३॥ ३॥ ३॥
कमालायहीनम॥ ॥ ॥ ॥
कनलखजा नकंनय॥ ३
कयिलसर्वदवानीयू॥
वज्रदयति तवत्सहितक
यिलधनूदानीदातय॥ वा
क्कन॥ ३३ ददस॥ ॥
कनलमूयदयनिकनः
कंन॥ ३३ श्रुदिति॥ यजमा
नसूरीमत्रथावगाहनः
कर्मलिश्रुदित्याय ॥ ॥
तथवज्रतयनितवत्ससः
हितकयिलधनू॥ यज
र्वदाध्यायिनश्रुमकनमः
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
यदद॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

मिसविय॥ उँ सुस्मि॥ उँ को
दातु॥ वीदि ज्ञाय॥ गालिया
न्याय॥ उँ सुमहं यदद॥
दक्षिणाविय॥ आनी वीद॥
उँ आरु॥ उँ यातं य॥
ऊरुगन्धदि॥ ॥ सामदिः
नथर्थं शत्रु॥ सामया॥ उँ
पृथ्वीं गं र॥ ॥ गं गाल
॥ उँ धर्मं रं व॥ ॥ वृधः
या॥ उँ हि वृधं गं रं गं रं
रं॥ वृधं रं रिया॥ उँ उँ दं
वयमयं य॥ ॥ एवया
॥ उँ विष्णुमसा वृथासि॥
गनेयं य॥ उँ गवा माग
॥ ॥ जाहया॥ उँ यस्मादं नी
निकमोति॥ ॥ कथया॥ उँ
ऊगं रं सर्वयज्ञाना॥ ॥

ऊनया॥ उँ यस्मादं नी
यनी॥ याद्वद्वनं मा माल
दानजाका वलिहा वाडाऊ
य॥ कतन॥ उँ दिनवयः
रुदानवियविधिः॥ ॥

नका अश्वत्थमादि नदानः
चाचकं॥ कतनकं॥ उँ अ
श्वत्थमा मूरुयं याद्वद्वनं
उँ दमासने नमः॥ वृथं
नमः॥ श्रीरं उयन्दनं
मयज्ञाय वीरयमकपृथं
नमः॥ ॥ कृष्णमूरुद्वान
कं॥ वाक॥ उँ श्रीवत्सणी
वियत्तं हि वीयं ४ व कः
संस्तिता॥ श्री सा रा॥ न्यसंय
निदं हि मलं य॥ निक॥

एतत्तुलज नद्यति तयनिः
 विम्वणीवक्ष दानं दानयं ॥
 ददस्व ॥ उं अथादि ॥ यजमा
 नस्थिति ॥ श्रीवत्स दानयं
 महं संयदद ॥ स्वस्ति ॥ उं
 काजन् ॥ दक्षिणाध्यायवी
 दि ॥ आणी वीद ॥ उं वाक्क
 स ॥ काये ॥ उं धूय धूय सुः
 वासितपियसदाधी स्व
 खदक्षं विअर्थी कां च नच
 म्यपूय निज न ॥ श्रीवत्स द
 नं पुनः ॥ यक्ष संस्ति न ग्याक
 वक्षु रुत्रि तस्व प्रकल शः
 सि तदाक्ष वा र्य सु री नमा
 मि न नं ए थी मया मूर्क
 य ॥ अउ गन्धादि ॥ ॐ स्व
 लमा ॥

वलिमूर्किय वाक्क धा य ॐ द
 मा सने नम ॥ यथी नम ॥
 यश्च का र चन्दनं कक्षयः
 क्का यवी न नूय क क्षयथी न
 म ॥ क्का क र दानक ॥ वाः
 क्का ॥ उं पुं ली क ज ला य
 नं लक्ष्मी वा गा सुख यदं ॥
 पुं ली क य दान न कीर्ति स
 यय क्क ॥ एतत्तुलज
 दानं दानयं ॥ ददस्व ॥ अ
 था ॥ यजमानस्थिति ॥ पुं
 ली कं पुं य महं संयदद ॥ स्व
 स्ति ॥ काजन् ॥ सिद्धार्थवी
 दि ॥ दक्षिणा ॥ आणी वीद ॥
 उं मदी श्री ॥ काये ॥ मा सि
 धूय क म्भ मा य स हि नी य
 कान संयु क्त य क्षी गव

टट्टकत्रन्मसिर्वैश्वानरा
मूर्ध्नि यत ॥ वाडी वासनवः
नरु सुमरयंकु वृद्धिनिः
को सुन्दानेयदसुचन्दनवि
यतर्वचन्दसदा रीवलि ॥ अ
जगन्धादि ॥ ॐ निवलिदाने ॥

ॐ व्यासमूर्ध्नि वाक्कृष्णाय ॐ
दमासननमः ॥ पूर्य्यनमः
॥ कर्णवचन्दनयी रायः
पवीतजा निपूर्य्यनमः ॥
कृष्णकृत ॥ ॐ वदविधुर्न
निर्णयर्जगत् विनाशनी
तस्मात्तु ध्वजप्रदानेन ज
यंरुवगिसर्वदा ॥ ध्वजदा
नेदातय्य ॥ ददस्व ॥ कृष्ण
हाम्ना ॥ अद्य ॥ यजमानश्च
नि ॥ ध्वजदाने तु र्यमर्ह

संप्रदद ॥ स्वस्ति ॥ ॐ काज
न ॥ अरुनवीहि ॥ दक्षिण
॥ आशीर्वाद ॥ ॐ यस्याकृष्ण
॥ स्मार्त ॥ ॐ यीर्गा ॥ ॐ कमला
सनसुवत्रदः कतुप्रदाः
नयियः ॥ रु सुप्रसूकशा
सर्ततदधूनानीवात्रमर्न
वलि ॥ ध्वयसर्जत्रमसूची
वविमलैक्यत्रसन्निधि
त ॥ वदात्यासवर्तसूगास्तु
यधिर्न व्यासं सदा रीरुम
ज ॥ अजगन्धादि ॥ ॐ नि
व्यासदानवियविधि ॥ ॥

ॐ हनुमान् वाक्कृष्णमूर्ध्नि
ॐ दमासननमः ॥ पूर्य्यन
मः ॥ कृष्णमचन्दनत्रकय
क्तापवीत कृष्ण ० पूर्य्यनम

४॥ कृष्णकृत॥ एतत्कलः
शदानंदानंदं॥ ददस्व॥ कृ
ष्णकृत॥ वाक्॥ अ॥ उं॥
दवानामूर्ति कृष्णलं मूर्ति
दवीसुसंगलं॥ सर्वतीर्थ
मयनिर्णयदानं नष्टरुदा
रुव॥ कलशदानं तुल्यं महं
संयदद॥ स्वस्ति॥ उं॥ को॥
ज॥ क॥ कलावतीहि॥ द॥
दि॥ अ॥ श्रीदी॥ उं॥ गी॥
वा॥ स॥ उं॥ या॥ लो॥ य॥
लुचल्लवकजागवृचिनं
संयुक्तमूलं रु॥ लं॥ धूयं॥
लु॥ कृ॥ कृ॥ म॥ यि॥ य॥ क॥ ज॥ था॥
वाल॥ या॥ ना॥ य॥ ट॥ अ॥ कृ॥ म॥
रि॥ वि॥ न॥ ली॥ की॥ रि॥ व॥ ल॥ वा॥ न॥
ना॥ म॥ स॥ य॥ य॥ द॥ धी॥ मा॥ र्जी॥

ननिजाजतस्मिन्नयनं नोमि
रुवाथासूरी॥ अ॥ ग॥ ग॥ अ॥ दि॥
॥०॥ मि॥ रु॥ न॥ मा॥ न॥ दा॥ वि॥ धि॥॥

उं॥ वि॥ शी॥ व॥ ल॥ मूर्ति॥ य॥ वा॥ कृ॥ धा॥
य॥ द॥ मा॥ स॥ न॥ न॥ म॥॥ य॥
य॥ न॥ म॥॥॥ ग॥ आ॥ च॥ न॥ द॥ न॥ वी॥
त॥ य॥ कृ॥ य॥ वी॥ न॥ स॥ व॥ र्धु॥ य॥ का॥
य॥ य॥ न॥ म॥॥ कृ॥ श॥ कृ॥ त॥॥ वा॥
य॥ उं॥ चा॥ म॥ लं॥ व॥ ल॥ स॥ च॥ न॥
रु॥ म॥ द॥ धु॥ स॥ स॥ नि॥ दी॥ चा॥ म॥ न॥
स॥ य॥ द॥ न॥ न॥ चा॥ य॥ वृ॥ दि॥ कृ॥
नृ॥ ध॥ म॥॥ चा॥ म॥ ल॥ द॥ न॥ द॥ न॥
य॥॥ उं॥ द॥ द॥ स॥॥॥ कृ॥ श॥ कृ॥
म॥॥ अ॥॥ य॥ ज॥ मा॥ न॥ स॥ य॥ दि॥
॥ चा॥ म॥ न॥ द॥ न॥ तु॥ ल्य॥ म॥ र्द॥ स॥
य॥ द॥ द॥॥ उं॥ स्व॥ स्ति॥॥ का॥ ज॥ ग॥॥

कालमाववीहि ॥ दक्षिण
 ॥ आशीर्वाद ॥ ॐ नमः सीता
 गीसि ॥ श्री ॥ ॐ नमः ॥
 निरुमांसशागनिवर्गामू
 र्जुर्जलालाहकी । दानचा
 मजयंकजासनसमिद्ध
 ध्वयः कृमः ॥ हस्तयस्य
 गदातिवीर्यनिजगः ॥
 जस्तवेष्टाद्युनिः ॥ सायं पर्व
 विशीवस्य च जलो नमो
 नमानित्यः ॥ अथ गन्धः
 दि ॥ ॥ ॐ निविशीवस्य दान
 नविय विधिः ॥ ॥

ॐ नमः सीता
 ॐ नमः सीता
 नमः ॥ दानवद्वन्द्वनः

नयः सीता वीर्यं नमः ॥
 कृष्णदत्त ॥ वाक् ॥ ॐ नमः
 स्वयं यमस्य नयः गलनः
 सैखि न ॥ मस्त्यदानं नमः
 निर्वर्णनं यष्टिं पुत्रयुक्त
 ॥ ॐ नमस्त्यदानं दानवी ॥
 ॐ ददस्व ॥ ॥ कृष्णदत्त ॥ ॐ
 अथ ॥ यजमानस्य नि ॥ म
 त्यदानं ॥ ॐ नमः सीता
 द ॥ ॐ काजग ॥ माववीहि
 ॥ दक्षिण ॥ आशीर्वाद ॥ ॐ
 अथ ॥ स्रु ॥ श्री ॥ ॐ नमः
 क्रीः गद्विर्गुजान्नवत्र
 दकं यिगुत्रिनीलकं ॥ अथ
 लं वन्द्यवद्वन्द्वनिलकं
 वाकागमूर्तिं तथा ॥ अथ गदि
 मस्त्ययुगं गुरीसुत्रनर्तः

चाक्रान्तरसंस्मरणं लाका
नानुहिभायकावधयर्द
नमभरुंकर्यं ॥ अथ गन्धा
दि ॥ ॐ गिरुयदाने ॥

ॐ यत्रशुभाममूर्तिर्यथाक्
क्षयं दमासनेनमः ॥ य
थैनमः ॥ गन्धचन्दननीलय
क्षायवीर्ययूथीयूथीनमः ॥
कृष्णकृष्ण ॥ वाक् ॥ ॐ वन्ननि
र्मितं चूर्णं स्रुष्टुं दधुमथः
ननु । चूर्णदानेनमः दवस
र्वलक्ष्मिस्तुतिवारुव ॥ एतच्च
एदानं दानयै ॥ ॐ दद
स्व ॥ कृष्णहस्त ॥ अथ ॥ ॐ
यजमानस्तुति ॥ चूर्णदानं
उत्तमं सूर्यदद ॥ मृग

वीरिवाक् ॥ ॐ स्वस्ति ॥ काज
द ॥ दक्षिण ॥ श्रीगीर्वाण ॥ ॐ
यजाय नय ॥ स्मृति ॥ ॐ गन्धा
नेन सदासुयुक्तरुलदं दे
दुर्योर्गस्वानिरुं । स्मृति विष्णु
मयी सुवर्चनविनदधुयः
दानं रुवन् । स्यात्प्रा । एतच्च
गुंवरु सुवर्चदं वं कवर्च
संस्मरणं नो मिष्टी कंदेन वः
वामविदिनं विद्या विर्चुं सः
वैदा ॥ अथ गन्धादि ॥ ॐ गि
यत्रशुभामयादानविधिः ॥

ॐ मार्कः ॥ सुयमूर्तिर्यथाक्
क्षयं दमासनेनमः ॥ य
थैनमः ॥ मनः ॥ गिलचन्दन
रश्मिगयक्षायवीर्ययूथी
नमः ॥ कृष्णकृष्ण ॥ वाक् ॥

ॐ दक्षिणावर्तं शंखं नैव यः
 हस्तसूत्रं चिन्तयेत् ॥ श्रीगणेशाय नमः
 धनाद्भूतं दत्त्वा मण्डपयद्वा
 न ॥ अथ नैव दत्तं दत्तं नैव
 ॥ ॐ ददस्व ॥ ॥ कृष्णाय नमः ॥
 अथ ॥ ॐ यत्तु मानस्य नि ॥
 शंखदानं तु यत्तु महं संप्रद
 द ॥ यत्तु वीहि यत्तु ॥ ॐ का
 दान् ॥ दक्षिणा ॥ श्रीगणेशाय नमः
 ॥ ॐ सकृच्च यत्तु ॥ ॐ ॥
 ॐ दूर्वादीन् नैव सुमनस
 नगीत्यन्ना नैव मूलकैः
 सुच्छेद्यं नैव सुनीलकण्ठ
 लं विश्वस्य मूर्खानि धिक् ॥ ला
 कानां हि न कायकैर्मरुतैः
 वान्धूयन्तु मासु ददन्त्य
 श्रीकमलासनैः स्रजं नैव
 मार्कटैः पुद्वेन नमः ॥ अथ

गन्धादि॥ ॐ तिमार्क १८५ याः
दानवियविधि॥ ॥

[illegible]

दक्षिणा ॥ आशीर्वाद ॥ ॐ ॐ
मन्त्रं वा ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ दक्षिणा
स्वस्त्यानां ॥ अथ गन्धमादि
॥ ॐ तिष्ठति विम्वदानं ॥

गतायुः कलिसकालस्य धन
यात्रादिगत्यानसूर्यविम्व
सहितनः आललासाः ला
हामातुरु ॥ वधदानं ॥ ॐ
सर्वदायसादि ॥ धूपदी
प ॥ अथ गन्धमादि ॥ ॥ कृष्ण
कृत ॥ वायु ॥ ॐ द्वादशसू
र्यगंकाः सूर्यविम्वयुः
दानगः ॥ काठिलकुरुल
युष्मसर्वान् कामान् प्रय
कुम्भ ॥ यजमानस्य शीमः
वधावनाहनकर्मणि ॥

दक्षिणमध्यविम्वसूर्यः
विम्वसहितं दृष्टं इत्यनस
सूर्यवधदानं नयं ॥ दद
त्य ॥ ॥ कृष्णसूर्य ॥ ॐ अथ वा
लाह ॥ अथादि ॥ यजमानः
नस्य शीमवधावनाहनः
कर्मणिः अमृतः गन्धमादि
दि ॥ अमृतनामवा कृष्ण
यदृष्टं इत्यनसूर्यविम्वः
सूर्यवधदानं इत्यमृतः
संयदद ॥ स्वस्ति ॥ कृष्ण
हामविय ॥ ॐ कादान् ॥
ॐ ददत्यला ॥ दक्षिणा ॥
आशीर्वाद ॥ ॐ ॐ ॐ इत्येता
नव ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ददत्यस
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ सर्वे भवन्तु सुखिनः ॥
ननुयं वा न ॥ मलिनवन्नम

अर्धवर्गः सर्वलं कालं
वित० ॥ उं सह आदि त्वसं
का संस्वरुं गोत्रं ॥ गं रितं
॥ समुत्थं जथ दानं दिव्यः
लाकमवापूयात् ॥ यजः
मानस्य गीमत्रथा ववाहः
नकर्म विजथ दान विवि
न सर्वं विविध विविधुर्न
मु ॥ केतनं जाय ॥ ॐ निज
थ दान विधिः ॥ ॥

तथा गीमदानं ॥ दत्तसा ना
युवसा ॥ मदत्त सा द्रुथ
॥ विधिः ॥ यजुं यायाय सा ॥
वाक्मलपूजा ॥ वाक्म ॥ क
गीमदानं ॥ उं या लक्ष्मीः स
वैरुता नां याय दं हव

रिगा ॥ सादवीरधनं वृथः
नदाउ० वायं वयाहं ॥
उता गीमदानं दत्तं ॥ दद
स ॥ ॥ उं अद्यवाह ॥ अथा
दि ॥ यजमानस्य गीमत्रथा
ववाहनं कर्म नि सथा ना
मगम ॥ एवाक्मलपूजा ॥ ॐ मां
मां वृद्धं दत्तं गीमदानं महं स
यदद ॥ उं द वस्यत्वा ॥ उं
कादात् ॥ लं द दिक्ष ॥ आः
गीमदानं ॥ उं दीर्घायुः ॥
ॐ नि गीमदानं विधिः ॥ ॥

तथा जथ जायाय वला
सायायाय व किमथन ॥
युयनः कृवृयक ॥ सायाया
य ॥ नगवैवा ॥ यद्म सधुयं

यो॥ स्वता नै वा॥ सा ज्ञा या य॥
उष डान कुर क॥ चामवन
गाल॥ गह नी न ग वा डः
दा खाल खान हा वा डः काय
क॥ वा क्क न स्वस्ति वा क्क
प॥ थ न॥ संखादि वा डः दका
ध का डान॥ ॥ दाल सः
विधि॥ थं लं सा य श न॥ ॐ
नि व थ ज्ञा या य विधि ॥

नता ऊ ज मान ला सा व यः
रू सिं हा स ना रु व स स्व स्ति
क स त॥ ॥ य रू भाल रुः
य॥ य था ग कि स र्खा रु नि
॥ वा ज्ञा ॥ द ग ॥ स ज मान॥
आ वा र्य॥ गिला रु नि॥ द
ग या डि॥ ग नि क॥ मु नि

क॥ वा क्क न यू जा॥ य व धा
न्या दि॥ वलि ये दान॥ वृत्ति
का हा म॥ वा य स्थि रु हा म
॥ वलि रु व धं॥ द क्षि क्षा दा
ने॥ सं ध व द्यु न वा ध न॥
आ च म्य॥ ॐ सु मि चि यान
॥ य धी ना रि व कं॥ ॥

नता सै यू र्ण रु नि का व यः
न॥ वा क्क न न ध्रु वा स खल
न या व य ज मान ध व क ज्ञा
न कं न॥ वा य॥ ॐ स ज मा
न स्थ री स न थ व वा रु ना
क र्म वि य रू सै यू र्ण रु नि
सू मु रु नि स मु॥ ॥ ॐ द
वा ग रु॥ ॐ सै व र्दि न का
॥ आ सै सा य १० न॥ ॥

शुभं ॥ अग्नि आशीर्वाद ॥
कलशादि आशीर्वाद ॥ म
लविमर्जन ॥ ॐ यस्या
कुम्भा ॥ वृद्धायुषी न विम
र्जन ॥ रुग्णनाशिलक
कलशादि विमर्जन ॥ ॥

शुभं ॥ चन्दनसिन्दु
लसंयुक्ताशीर्वाद ॥ ॥

रुल्लालिक ॥ आनन ॥ ॐ
नञासि ॥ प्रणिष्ठा ॥ ॐ मन्त्र
नाईति ॥ नायनहृत् ॥
द्रुमकनसाचक ॥ ॥ य
द्रु विमर्जन ॥ सूर्यसा
क्षिधाय ॥ ॥

दाक विरक्त सकलक ॥
विहाताया विरक्त ॥ ॥

नग ४ विहाताया धवधव
ॐ ददता मालकाः धाय
नायन ॥ दक्षिणाः गाय
कः जायाव ननक ॥ ॥

विहातायाः कलशादिः य
द्रु कुण्डाजाययका ॥ गाय
जाग १० गक कय ॥ वलिः
कोमात्रीया धान सदाय ॥
१० गायसाया न विरक्त ॥ स
कती वाय ॥ ॥

नग ४ मवयाः धडा १ धधन
हायासंयुक्त विरक्त ॥ नल
सखसिक्तयायाव सन्धन

आ गलमाल को न या डा॥ च
यन थिय क ॥ ॥ ॐ निरी
मन था व ना ह न य रू विधि
४ समा फ ४॥

य दू ना निखाल न श ना ॥
य दू द य का डा था न वि
थः द गु लि ॐ सु य व ना
श का र्क वा ह न द य का
वः ना रू ॥ ॐ निः
व तु थि या वि धि श ना ॥

ॐ न मान व गु हा य ॥ ॥
आ दि ह य रा सा र्क ॥ ॐ जा ग
द श क लि ग का थ य क ल
म क वि श सा नि न स फः
म्या म धि य सू ना नि क पि

ल ग दू नु यू डा रु नि दान
ध न सू धू य क नू व लि द
य रू वि ४ रु थि य मः धू यः
कू ज व रु स लु ल ग न नीः
मि स दा रा रु क र ॥ ॥ अ य
ग धा दि ॥ १ ॥

अ ग न या ॥ ॐ या भा ला दि
ग ति प्र म ल ग न व र्वा न
था वा रु ज ना व दा ज क लः
क व नि द श मी रु न्दा धि कि
था धि य धू य गु गु ल धू
म क रु द ह न रु गान मि ध
गु उ व क य रा नू न व रु
थि य स दा नि ही न भा म
ल ॥ ॥
अ ग धा दि ॥ अ ग ल या ॥

वधया साय ॥ ॐ ह्रीं । ग साय
कर्मि वधस्य सधिया नात्राय
हं वे क्व वं द्वादश्यां मज्झा ॥
सि स सुव वि । ग ना ना धनि
सुं गुजां ॥ धूर्यं स ऊ न स न
वक्रिज ० नै यी न नि द । ध्म
द नै तु छि द्म स पु द न य स्य
म न सा नि र्यं न मा वो ध व ॥
श्रु ग न क्षा दि ॥ ॐ व ध या ॥
सा नि ॥ ॥ ॥

वृहस्य नि या साय ॥ ॥
ॐ यी रिर्य स्य द्वा द्वा द्वा
न नि रिरि धूर्यं य वा नै व
लि द । ग सि धू स रु ॥ ॐ
॥ ॐ न व य । ग व मु च द र्यं
स दा । सो म्यं र्यं क उ क स्य

यी ग न रु व व द्वा धि द व लि
या सो वि य न्द व रु स्य न म
स्व म्ख नो मि स दा हं गु न्
॥ ॥ श्रु ग न क्षा दि ॥ वृह
स्य या साय ॥ ॥

श्रु क या साय ॥ ॐ य वां व
न रु हा ट का मि न व मी ख
त्वा ट धूर्यं द रु ॥ दानं रा
ग्य म हा म्ख क नु दि ऊं गु
क स्य ग का धि या वे दा म् ॥
नि र वूर्व म ल ग नं य वा
धि य न्दा य धी ॥ ॥ श्रु ग
क्षा दि ॥ श्रु क या साय ॥ ॥

धूमजिउ

गने श्रु न या साय ॥ ॐ श्रु द
का श्रय स सु व व म धि य

भोगाद्युयाभादिनीधूर्य
चायुगुदयमनकभनः
नजानिजावनरादीर्घ
क्षकृतिपञ्चिमभनिय
मयाजायनिपुणधीयः
विनायवलपुदकुजः
नमानिहमखे।गायद॥
अगमश्वादि॥ ॥ गने
यनयासाय॥ ॥

वाहयासाय॥ उयस्यपू
मिऊनमृकुरुनलीया
नमलयाहवः धूर्यकः
दकृताजनमधूर्यनयी
भक्तुमासादनी।त्यानीया
यसनाहकालमधियय
याधियाग्रुयः॥ निः

कालययाहियरुसधूः
नासाडाहवमंगल॥ ॥
अगमश्वादि॥ ॥ ॐ निः
वाहयासाय॥ ॥

कहयासाय॥ उजमय
विरमयमीन्दुदिवसा
उनुजागमनः कर्तुं शूदः
कृताञ्जलिं नमः निचि
पवित्रद्वयदं।यस्यो
दकृताजनं यनयनीवि
लं स्रधामयिचिचानः
वल्लिङ्गगदानमृदिदं
निचयुष्टिकृत्॥ ॥ अग
मश्वादि॥ ॐ निः कहयासा
य॥ ॥

जन्मया श्राव ॥ ॐ द वी ज
लसुत्रा रुमादिद रु
नय हा धिवु झा यद दाने
वमुमने कन न्न विविधाः
गयादिरु मिगदी ॥ यथैः
चाञ्च सुधूय मन्न वलि सि
रुजा निजा वन्न राजा नि
सुग रुना नि रु क युन
नोमि सदा शा नि के ॥ ॥
अशगन्नादि ॥ ॐ निजन्म
या ॥ नव गुरु या सु नि ॥ ॥

क्रयक्रसद ॥ ११ ॥ क्रस
ना ॥ १ ॥ क्रसक्र ॥ १ ॥ धनद
नदाडा रीमत्रधधाय ॥ ॥
चय ॥ ८३ ॥ विलाडा ॥ ६ ॥ वि

विद्रु ॥ ६ ॥ सहस्रचन्द्र धा
य ॥ ॥ चयचाद ॥ ८८ ॥
चाक्र ॥ ८ ॥ मरुत्रधधायः
॥ ॥ गुयद ॥ १० ॥ गुः
नाडा ॥ १ ॥ गुद्रुडा ॥ १ ॥
दवत्रधधाय ॥ ॥ गन
द्विडा ॥ १०० ॥ जिलाडा ॥ १०
॥ जिद्रुडा ॥ १० ॥ मरुदव
त्रधधाय ॥ ॥ धनजनका
या विधि ॥ ॥

सूय ॥ सकसक निव वा नि
मास सकदिना निवा ॥ १ ॥
मिस्तीमत्र धाना म सर्वः
याय कथारु व नू ॥ रीम
त्रधधाय ॥ १ ॥ ॥ अः
रुणी निचववा निमासा

सुखदिनानि च महानाथ
निविशाना सर्वे यथा कथा
यच ॥ ३ ॥ ॥ महानाथ ध्या
य ध्या ॥ ॥ उवासी निवृत्त
वर्षा निमासा च त्वालि संयुः
ना । सहस्रचन्द्र संदृष्ट
न बालायाय संकरी ॥ ३ ॥
सहस्रचन्द्र ध्याय धलदं ॥
॥ नवनव निवर्षा नि
मासादिन राधे वच । देव
नथ मिनिखा रं स्वयं वृद्ध
युवरीय । गो ॥ ४ ॥ देव नथ
ध्याय धदं कन ॥ ॥ शत
वर्ष दशा वैव दश मासीन
थादिनी । महा देव नथ ॥
आकंडर्त्त संयत्र मं निर्व ॥
५ ॥ धनं दत्त दाता महा

देव नथ ध्याय ॥ ॥ ॥

सहस्रचन्द्र यामन च्छु यक
धाधदा वदिक ॥ १००० ॥ ॥
कृष्ण गिल जल दान कं व ॥
वाक्याय ॥ उं अद्यादि ॥
सहस्र दीप दान अर्थ्य
संख्या न विद्यते ॥ गदा नैः
वसु दान अर्थ मिदानं च ॥
आकृर्क । शन पृथ सहस्र
लवन्दुला कं मवा प्रया ॥
॥ यजमानस्य यथा ॥ शु
करुल कामनार्थ सहस्र
संख्या युद्ध लि न दीप माः
लाय दान महं क विष्ठा ॥
कृष्ण काल तावतं ॥ ॥

१ उग्रहावजाव ॥ धनि ॥
 १ आदिलया ॥ मलिक ॥ सिज
 १ सामया ॥ मूठि ॥
 १ ज्ञानया ॥ यजः वन ॥
 १ वृधया ॥ कनकननः वन
 १ वृहस्यनिया ॥ वृहनाग ॥
 १ शुक्रया ॥ रुजः वन ॥
 १ रुठिकः अथवाथं ३ ॥
 १ गनेश्वरया ॥ हू नु नील ॥
 १ वाङ्मया ॥ नावतः वन ॥
 १ ककुया ॥ कुल ॥
 १ ऊनया ॥ लू ॥
 १ नवग्रहाया वनथन ॥
 १ अश्वलुमाया ॥ लू वकिः
 १ वलिया ॥ मणिः वन ॥
 १ यासया ॥ डाहा ॥ वन ॥
 १ रुद्रमानया ॥ यजः वन ॥

१ विहीवमया ॥ वाहुः वन
 १ कयया ॥ नीलः वन ॥
 १ यजगुनामया ॥ वंशालः व
 १ मार्कण्डेया ॥ हलः वन ॥
 १ चन्द्रविम्बया ॥ हल ॥
 १ सूर्यविम्बया ॥ मलिक ॥
 १ अश्वलुमाया वनदक्षिणा ॥
 १ आदिलया ॥ मात्रासाथयः
 १ सामया ॥ श्रीख ॥
 १ ज्ञानलया ॥ सा ॥
 १ वृधया ॥ लू ॥
 १ वृहस्यनिया ॥ कमकुल ॥
 १ अथवाः लू ॥
 १ शुक्रया ॥ गल ॥
 १ गनीश्वरया ॥ दाहाया ॥
 १ वाङ्मया ॥ खरु ॥
 १ ककुया ॥ चालस ॥

१ जन्म या ॥ खाता ॥
 १ धन नव ग्रहा या ॥ थाय ॥
 १ अश्वत्थ माया ॥ धीवच्छ ॥
 १ वलि ॥ यल ॥ चिक्र ॥
 १ यास या ॥ धज ॥
 १ रुनुमान या ॥ कलश ॥
 १ विही वन या ॥ चामर ॥
 १ रुय या ॥ दा ॥
 १ यधुनाम या ॥ चक्र ॥
 १ मार्क ॥ उया ॥ गीख ॥
 १ अश्वत्थ माया ॥ थाय ॥
 १ यवगवसाधनमाल ॥
 १ नथ या ॥ डाहासा ॥ लवहा
 मा ॥ लवहावा ॥ उरु २ माला ॥
 यवा ॥ ज्ञान १ माल ॥ नथस
 तय ॥ सिजवाता ॥ लाजल
 ॥ कैशवाता ॥ नायुया न ॥

यज्ञ जालनसकनीडरथः
 मात्र ॥ कर्म १ धा यसावाक्रः
 भयान ॥ यथया लीख ॥ न
 झजल ॥ सानडावधि ॥ ॥

सम्बन्ध १२४ यज्ञमाशु ॥ पुः
 कृपक ॥ एकादश्यायोगिथो
 मंगलवालयकृद्ः संपूर्ण
 धीर्धिरवाक्कया ॥ धीदववा
 जस्यान्तर्धीकृष्णजाजन
 शीमजथावशाहनः विधि
 तं ॥ संपूर्ण ॥ धसम्बन्धन
 मधीयागन्तुमन्त्रवाजी
 र्ववस ॥ वकनवादावया ॥
 कायसुज्ञानन्दरुविरागा
 योतावावन्तसधीश्वगद
 वया ॥ याकवचिनकलः ॥

मया यज्ञावर्णिश्वं नशुभा ॥
शुशंरुवतु सर्वदा ॥ ॥

श॥ श्रीखलुचन्दन॥ चमयस्नान॥ श्रीम
व॥ यमकाश॥ नृपकमन॥ कृष्णवर्तु॥
या॥ कर्पूना॥ जीलस्नान॥ पीत॥
रु॥ कूंकुम॥ कृत्स्नस्नान॥ नक॥
वि॥ ग्लानाचन॥ सुवर्णयूथि॥ पीत॥
रु॥ देवदात्र॥ श्वेतपीतपृष्ठा॥ श्वेत
य॥ गन्धचन्दन॥ त्रिधिसनाने॥ नील॥
मा॥ मनसिला॥ यस्तस्नान॥ श्वेत॥

[illegible]

[illegible]

श्रीशङ्करभ्योनमः॥ ॥

